लुड्डाइट आंदोलन (1811–1816): औद्योगिक पूँजीवाद के विरुद्ध श्रमिक प्रतिरोध का प्रारंभिक चरण
The Luddite Movement (1811–1816): Early Working-Class Resistance to Industrial Capitalism

लुड्डाइट आंदोलन 1811 से 1816 के बीच इंग्लैंड के वस्त्र उद्योग क्षेत्रों—नॉटिंघमशायर, यॉर्कशायर और लैंकाशायर—में उभरा एक संगठित श्रमिक प्रतिरोध था। यह आंदोलन औद्योगिक क्रांति के प्रारंभिक चरण में मशीनों के बढ़ते उपयोग और पारंपरिक कारीगरों के विस्थापन के विरुद्ध था। आंदोलन का नाम काल्पनिक या प्रतीकात्मक नेता "नेड लुड" से जुड़ा है, जिसे श्रमिक प्रतिरोध का प्रतीक माना गया।

प्रारंभिक दृष्टि में यह आंदोलन "मशीन-विरोधी" प्रतीत होता है, किंतु गहन विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि लुड्डाइट केवल तकनीक का विरोध नहीं कर रहे थे, बल्कि उन सामाजिक-आर्थिक संबंधों का विरोध कर रहे थे, जो मशीनों के माध्यम से स्थापित हो रहे थे। वस्त्र उद्योग में नई मशीनों ने कुशल कारीगरों की आवश्यकता कम कर दी और कम मजदूरी पर अकुशल श्रमिकों को नियोजित करना संभव बना दिया। परिणामस्वरूप पारंपरिक शिल्प आधारित उत्पादन प्रणाली संकट में पड़ गई।

नेपोलियन युद्धों के कारण आर्थिक मंदी, बढ़ती महँगाई और बेरोजगारी ने श्रमिक असंतोष को और तीव्र किया। श्रमिकों ने संगठित रूप से कारखानों पर आक्रमण कर मशीनों को नष्ट किया। सरकार ने इस आंदोलन को गंभीर खतरे के रूप में देखा और 1812 में मशीन तोड़ने को मृत्युदंड योग्य अपराध घोषित किया। सैन्य बलों की तैनाती और कठोर दमन के माध्यम से आंदोलन को दबा दिया गया।

इतिहासलेखन में लुड्डाइट आंदोलन की विभिन्न व्याख्याएँ प्रस्तुत की गई हैं। प्रारंभिक उदारवादी इतिहासकारों ने इसे अज्ञानतापूर्ण तकनीक-विरोधी प्रतिक्रिया माना। किंतु मार्क्सवादी और सामाजिक इतिहासकारों—विशेषतः ई. पी. थॉम्पसन—ने इसे वर्ग-संघर्ष की चेतना और "नैतिक अर्थव्यवस्था" (Moral Economy) की अवधारणा के संदर्भ में समझाया। उनके अनुसार लुड्डाइट आंदोलन आधुनिक श्रमिक चेतना का प्रारंभिक रूप था, जो न्यायपूर्ण मजदूरी और उत्पादन संबंधों की माँग कर रहा था।

निष्कर्षतः लुड्डाइट आंदोलन को केवल मशीन-विरोधी हिंसा के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। यह औद्योगिक पूँजीवाद के उदय के विरुद्ध श्रमिक वर्ग की संगठित प्रतिक्रिया थी, जिसने आगे चलकर ट्रेड यूनियन आंदोलन और श्रमिक राजनीति के विकास की आधारशिला रखी।